विश्व को एकता के सूत्र में पिरोती है मूल्यशिक्षा - चंद्रशेखरन

10 भाषाओं में संचालित किया जा रहा है मूल्यशिक्षा का पाठ्यक्रम

आबू रोड। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शांतिवन परिसर में अन्नामलाई विश्वविद्यालय और यशवंत राव चौहान विश्वविद्यालय नासिक की ओर से दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मूल्य शिक्षा में पीजी पाठ्यक्रम और एमबीए के कोर्स में उज़ीर्ण लगभग 700 उज़ीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र दिया गया। इस समारोह में मुज़्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडू के डायरेज़्टर डॉ.आरएम चंद्रशेखरन ने कहा कि शिक्षा का अर्थ सिर्फ नौकरी प्राप्त करना ही नहीं होता है बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखना होता है। जिसकी शिक्षा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संचालित मूल्यनिष्ठ पाठ्यक्रम से मिलती है। प्राचीन समय में जो भी महापुरुष थे उनका जीवन भी मूल्यों से संपन्न था। उन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार सूचना का संबंध शिक्षा से है, उसी प्रकार शिक्षा का संबंध मूल्य से है। आज देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व को मूल्यों की शिक्षा देने की आवश्यकता है। मूल्यों के अभाव में ही विश्व में अशांति व अस्थिरता का महौल बना हुआ है। यही वो शिक्षा है जो पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिरो सकती है।

संस्था की संयुज़्त मुज़्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि अब हमें यह समझना होगा कि जीवन बनती है आध्यात्मिकता से। आध्यात्मिक शिक्षा का मतलब ही होता है स्वयं को पहचानना और पिता परमात्मा से सुख, शांति और आनंद का अनुभव करना ही वास्तविक शिक्षा है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जो मूल्य की शिक्षा दी जा रही है उससे हमारे चरित्र का विकास होता है, जिससे मानव दिव्यता की ओर अग्रसर हो जाता है। स्कूल, कॉलेजों आदि से हम कितनी भी उच्च शिक्षा ज़्यों न प्राप्त कर लें, उस शिक्षा से हमें सदाकाल का सुख, शांति और आनंद की अनुभूति नहीं होती है। संस्था की सह-मुज़्य प्रशासिका दादी ह्रदयमोहिनी ने कहा कि स्कूल, कॉलेजों में दी जा रही शिक्षा के साथ-साथ हमें मूल्यों को भी जीवन में धारण करना चाहिए। यह शिक्षा हमें सिर्फ शिक्षित ही नहीं बनाती है बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाती है और सबको सज़्मान देना भी सिखाती है। संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यज़्ति का मानसिक स्तर तो ऊपर उठ गया लेकिन उसका दूसरा पहलू जो चरित्र का है उसका दिनोंदिन पतन ही होता जा रहा है। इसलिए वर्तमान समय मूल्य शिक्षा की बहुत ही आवश्यकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दी जा रही मूल्यों की शिक्षा व्यज़्ति के चरित्र निर्माण के साथ उसे मानसिक रूप से सशज़्त भी बनाती है। यह शिक्षा हमें सिर्फ डिग्री ही नहीं देती है बल्कि दिव्यता की ओर आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। उन्होंने बताया कि अभी तक पंद्रह सौ विद्यार्थियों ने एमबीए का कोर्स पूरा कर लिया है। यह पाठ्यक्रम 10 भाषाओं में संचालित किया जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ.आरएम चंद्रशेखरन ने दादी जी को मोमेंटो भेंटकर सज़्मानित किया। इस कार्यक्रम में डॉ.आर.पी.गुप्ता, डॉ.पांडयमणि, हरिश शुज़्ल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी को प्रमाण-पत्र देकर सज़्मानित किया गया।